धान की नई तकनीक का सफल परीक्षण किया गया

चंडीगढ़ 9 नवम्बर। डायरेक्ट सीडिंग विधि से पानी की खपत में 40 प्रतिशत की बचत

जल्लोवाल, पंजाब 9 नवम्बर। पेप्सीको इंडिया ने आज यहां धान की सीधी बिजाई विधि के सफल परीक्षण नतीजों की घोषणा की। डायरेक्ट सीडिंग तकनीक के प्रयोग से पानी की खपत में 40 प्रतिशत तक गिरावट दर्ज की गयी है। इसी तरह से उत्पादन लागत में भी रु. 1,000 प्रति एकड़ से अधिक की कमी आई है। जिन खेतों में इस विधि से धान की खेती की गयी थी, वहां अब इस फसल की कटाई चल रही है।

पेप्सीको इंडिया ने इस तरह के परीक्षण का अंतिम चरण जल्लोवाल में स्थानीय किसानों के सहयोग से 20 एकड़ जमीन पर पूरा किया है। इससे पहले भी पेप्सीको इंडिया पिछले तीन वर्षों से इसी तरह के प्रयोग जल्लोवाल स्थित अपने खुद के रिसर्च एवं डवलपमेंट विभाग की जमीन पर करती आ रही है।

आम तौर पर, धान को किसी छोटी नर्सरी में बोया जाता है, जहां से करीब चार सप्ताह बाद वह पौध हटाकर पानी भरे मुख्य खेतों में रोपे जाते हैं, ताकि वह पूर्ण फसल के रूप में विकसित हो सके। फसल के बड़े हाने तक खेतों में करीब तीन इंच ऊंचाई तक पानी भरकर रखा जाता है, खास तौर पर इसलिए ताकि खर-पतवार न बढ़ जायें। इस पारंपरिक विधि में पानी की अत्यधिक खपत होती है, जबकि पेप्सीको इंडिया द्वारा सफलतापूर्वक जांची-परखी गयी 'डायरेक्ट सीडिंग' विधि में पानी की खपत और उत्पादन लागत दोनों में ही काफी कमी नोट की गयी है। इसके अलावा, किसाना को पंप और ट्यूबवैल आदि अधिक समय तक चलाने के कारण ऊर्जा पर अधिक व्यय करना पड़ता है। भारतीय कृषि को अधिक प्रभावी बनाने के लिए पेप्सीको इंडिया ने तीन वर्ष पूर्व इस परियोजना की शुरुआत की थी। पेप्सीको इंडिया अपने प्रयोगों की सफलता से उत्साहित होकर धान की डायरेक्ट सीडिंग विधि के बारे में जागरूगता फैलाने के साथ-साथ इस विधि को लोकप्रिय भी बनाना चाहती है, ताकि पानी की खपत में कमी आये और धान की खेती पर आने वाली लागत भी घटे।'

पंजाब में पेप्सीको इंडिया ने कृषि के क्षेत्र में 1989 में अपनी गतिविधियां प्रारंभ कीं। इस दौरान टमाटर और मिर्ची की अनेक नयी प्रजातियों का विकास किया गया तथा इनकी कृषि के उन्नत तरीके अमल में लाये गये, जिससे पंजाब के किसानों को खास तौर पर बहुत लाभ मिला है और इन दोनों फसलों की पैदावार भी बढ गयी।